IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दलित बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति

शोधार्थी
उमेश चन्द्र महतो
शिक्षा विभाग
राधा गोविन्द विश्वविद्यालय,
रामगढ़, झारखण्ड

शोध निदेशक
डॉ0 अशोक कुमार
शिक्षा विभाग
राधा गोविन्द विश्वविद्यालय,
रामगढ झारखण्ड

सार :–

शिक्षा एक महत्वपूर्ण और सर्वव्यापी विषय है यह मानव की एक विशेष उपलब्धि है। अतीतकाल से मनुष्य ने जागरूक रहकर अपनी वाक् – शक्ति का व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, समुदाय तथा समुदाय के बीच तथा सन्तति तथा सन्तति के बीच अपने व्यवहारिक अनुभव – भण्डार का संचार करने के लिए उपयोग किया है। इनमें प्राकृतिक घटनाओं, नियमों विधि–निषेध की संकेत भाषा का उपयोग है ताकि व्यक्ति का सामाजीकरण हो सके और वैयक्तिक स्मृति के माध्यम् से पूरी जाति जीवित रह सके।

परिचय :–

भारत में बालिका शिक्षा काफी हद तक राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक है क्योंकि लड़कियाँ लड़कों की तुलना में बेहतर काम कर सकती है। आजकल बालिका शिक्षा आवश्यक है और अनिवार्य भी है क्योंकि बालिकाएं देश का भविष्य है भारत में सामाजिक और आर्थिक रूप से विकसित करने के लिए लड़की की शिक्षा आवश्यक है। किसी भी सभ्य समाज की स्थिति उस समाज में स्त्रियों की दशा देखकर ज्ञात की जा सकती है। महिलाओं की स्थिति में समय – समय पर देश काल के अनुसार परिवर्तन होता रहा है। समय के साथ भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन हुये जिससे महिलाओं की स्थिति में दिन प्रतिदिन गिरावट आती गई तथा गरीब महिलाओं पर इसका अधिक प्रभाव पड़ा क्योंकि सैकड़ों वर्षों तक गुलामी के कारण भारत विश्व के सबसे गरीब देशों में एक है। समाज के निर्माण में महिलाओं की भूमिका उतना ही प्रमुख है जितनी की शरीर को जीवित रखने के लिए जल, वायु और भोजन है। स्त्रियां ही संतति की परम्परा में मुख्य भूमिका निभाती है। फिर भी प्राचीन समाज से लेकर आधुनिक कहे जाने वाले समाज तक स्त्रियां उपेक्षित ही रही है। उन्हें कम से कम सुविधाओं, अधिकारों और उन्नति के अवसरों में रखा जाता रहा है,

इसी कारण महिलाओं की परिस्थिति अत्यंत निचले स्तर पर है। भारतीय समाज की परम्परागत व्यवस्था में महिलायें आजीवन, पिता, पति और पुत्र के संरक्षण में जीवन यापन करती रही है। भारतीय संविधान में पुरूषों एवं महिलाओं को समान दर्जा और अधिकार दिये जाने के बावजूद इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि विकास और सामाजिक स्तर की दृष्टि से महिलायें अभी पुरूषों से काफी पीछे है। भारतीय समाज में महिला आज भी कमजोर वर्गों में शामिल है। महिला परिवार की आधारशिला है और सामाजिक विकास बहुत कुछ उसी के सद्प्रयासों से सम्भव है जिस समाज की महिलायें उपेक्षा और तिरस्कार का शिकार होती है वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता।

तकनीकी शब्द :– दलित बालिका।

महत्व :–

बालिकाओं की शिक्षा में बहुत सारे फायदे शामिल हैं एक पढ़ी लिखी और बड़ी हो चुकी लड़की देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिक निभा सकती है। एक शिक्षित लड़की पुरूषों के भार और बोझ को विभिन्न क्षेत्रों में साझा कर सकती है। एक पढ़ी लिखी लड़की जिससे कम उम्र में शादी करने के लिए मजबूर नहीं किया जाय तो लेखक, शिक्षक, डॉक्टर और वैज्ञानिक के रूप में काम कर सकती है। वह अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी बहुत अच्छा प्रदर्शन कर सकती है।

आर्थिक संकट के युग में लड़कियों के लिए शिक्षा एक वरदान है आज के समय में एक मध्यवर्गीय परिवार में दोनों सिरों का मिलना वाकई मुश्किल है। शादी के बाद एक शिक्षित लड़की काम कर सकती है और परिवार के खर्चों को वहन करने में अपने पति की मदद कर सकती है। अगर पति की समय सीमा समाप्त हो जाती है और परिवार में कोई मदद नहीं करता तो वह भी कमा सकती है। शिक्षा महलिाओं के विचारों को व्यापक बनाती है इस प्रकार यह उनके बच्चों की अच्छी परवरिश में मदद करता है इससे उसे यह तय करने की स्वतंत्रता भी मिलती है कि उनके और परिवार के लिए क्या सबसे अच्छा है। शिक्षा एक लड़की को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने में मदद करती है। जबकि वह अपने अधिकारों और महिला सशक्तीकरण को जानती है जो उसे लैंगिक असमानता की समस्या से लड़ने में मदद करती है।

एक पुरूष को शिक्षित करना केवल राष्ट्र के कुछ हिस्सों को शिक्षित कर सकता है जबकि एक महिला को शिक्षित करना पूरे देश को शिक्षित कर सकती है। लड़कियों की शिक्षा की कमी ने समाज के शक्तिशाली वर्ग को कमजोर कर दिया है। इसलिए महिलाओं को शिक्षा का पूर्ण अधिकार होना चाहिए और उन्हें पुरूषों की तुलना में कमजोर नहीं माना जाना चाहिए।

बालिका शिक्षा के महत्व पर जोर देते हुए **नेपोलियन** ने एक बार कहा था "राष्ट्र की प्रगति प्रशिक्षित और शिक्षित माताओं के बिना असंभव है और यदि मेरे देश की महिलायें शिक्षित नहीं हैं तो लगभग आधे लोग निरक्षर होंगे।"

महान दार्शनिक और विचारक **रूसों** ने कहा है – "यदि आप मुझे सौ आदर्श माताएँ दें तो मैं आपको एक आदर्श राष्ट्र दूँगा।" **महात्मा गाँधी** का कथन है कि – जब किसी परिवार में एक महिला शिक्षित हो जाती है उससे दो परिवार लाभान्वित होते हैं।

विभिन्न आयोगों में **कोठारी आयोग** द्वारा भी बालिका शिक्षा के महत्व को बताया गया है जिसमें स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने हेतु अवसर प्रदन करने संबंधी बातों पर ध्यान आकृष्ट किया गया है। इस आयोग का कहना है कि शिक्षित स्त्रियों के अभाव में शिक्षित व्यक्ति नहीं हो सकते अतः स्त्री शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है।

समस्या :–

दुर्गम निवास स्थान एक समस्या –

लगभग सभी अनुसूचित जनजातियाँ पहाड़ी भागों, जंगली दल दल भूमि और ऐसे स्थानों में निवास करती है जहाँ सड़कों का अभाव है और वर्तमान यातायात एवं संचार के साधन अभी वहाँ उपलब्ध नहीं है। इसका परिणाम यह हुआ कि बालिकाएं विद्यालय तक नहीं पहुँच पाती है क्योंकि विद्यालय दुर्गम स्थानों पर अवस्थित है।

आर्थिर्क समस्याएँ :–

अनुसूचित जनजाति समाज के लोग किसी तरह मेहनत मजदूरी करके अपना और अपने परिवार का भरण पोषण कर पाते हैं ऐसे लोग अपने बच्चों से या तो घर का काम लेते हैं या उनको किसी काम पर लगा देते हैं क्योंकि वे गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं, जिनको दोनो वक्त का भोजन भी नसीब नहीं होात है। ऐसे लोग अपने बच्चों को शिक्षा दिला सकेंगे ऐसा कल्पना करना उचित नहीं होगा।

सामाजिक असमानता :–

इस जाति समाज में स्त्री पुरूष को एक नजर से नहीं देखा जाता है। प्रकृति ने भी स्त्री और पुरूष की क्षमता में अंतर किया है। इस कारण इन महिलाओं को उनकी बाल्यावस्था से ही घर के कामों में ज्यादा रूचि लेने को प्रोत्साहित किया जाता है।

सुरक्षा की स्थिति :–

ग्रामीण इलाकों में दूरदराज के सकूलों में बालिकाओं को भेजने से उनके माता – पिता कतराते हैं उनको स्कूल दूर होने की स्थिति में स्कूल छोड़ने को मजबूर कर दिया जाता है जिस कारण अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाती है।

माता पिता की निरक्षरता :–

माता पिता की निरक्षरता भी अनुसूचित जन जाति के महिलाओं की शिक्षा की रूकावटें होती है क्योंकि वे निरक्षर होने के कारण शिक्षा प्राप्त करने का लाभ क्या होता है। उन्हें इस बात का ज्ञात नहीं होता है। इस कारण वे अपने बच्चों को विद्यालय नहीं भेजते हैं।

समधान :–

- प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से माता – पिता को बच्चों की शिक्षा के महत्व से परिचित कराया जाए जिससे वे अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय में भेजें।
- प्रौढ़ो की रूढ़िवादिता, कुरीतियों और अंधविश्वास को दूर करने के लिए बदलते समाज की स्थितियों से उन्हें परिचित कराने के लिए विभिन्न प्रकार के अभियान चलाया जाये।
- अनुसूचित जाति के बालिकाओं के लिए बस्तियों एवं मोहल्लों में पाठशालायें खोले जाएं।
- माध्यमिक विद्यालयों में सभी बालिकाओं को प्रवेश दिलाने के लिए प्रत्येक शैक्षिक सत्र के प्रारम्भ में अभियान चलाने का दायित्व शिक्षिकों को दिया जाए।
- विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु महिलाओं को विशेष आरक्षण की सुविधा दी जाए।
- उन्हें अनके प्रकार की छात्रवृत्ति दी जाए।
- बालिकाओं के लिए छात्रावास का निर्माण कराया जाए।
- अनुसूचित जनजातीय क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या को बढ़ाया जाए।
- बालिकाओं की उसी भाषा में शिक्षा दी जाए जिस भाषा को वे बोलते हैं।
- विद्यालय में उन बालिकाओं का नियमित रूप से स्वास्थ्य संबंधी जाँच कराया जाए।
- महिला शिक्षिकाओं की विद्यलाय में नियुक्ति की जाए।
- माध्यमिक स्तर पर सुविधाओं का विस्तार किया जाए और विरल आबादी वाले क्षेत्रों में आवासीय आश्रम खोले जाएं।
- आंगन बाड़ियों, अनौपचारिक, केन्द्र और प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र बहुल इलाकों में प्राथमिक स्तर पर खोले जाएं।
- इन वर्गों की छात्राओं के लिए निशुल्क पुस्तके, वर्दी, स्टेशनरी, स्कूल बैग इत्यादि के रूप में प्रोत्साहन मिले।

- विद्यालय छोड़कर जा चूकी बालिकाओं को वापस लाने हेतु अभियान चलाया जाय।
- पचास प्रतिशत महिला शिक्षिकाओं की नियुक्ती की जाय।

निष्कर्ष :–

झारखण्ड शिक्षा के क्षेत्र में काफी पिछड़ा क्षेत्र रहा है। दरअसल जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र होने एवं अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान कायम रखने के कारण आदिवासी प्रारम्भ से ही समाज के मुख्य धारा से अलग रहे जिसके कारण ये शिक्षा से प्रायः दूर ही रहे जनजातीय संस्कृति की अपनी विशिष्ट पहचान है। इसी कड़ी में इनके बीच सांस्कृतिक शिक्षा का प्रचलन अवश्य रहा है जो सामान्यतः "धुमकुरिया" के नाम से जाने जाती हैं।

धीरे – धीरे जनजातियों में शिक्षा का प्रसार ईसाई मिशनरियों के आगमन के पश्चात् होना शुरू हुआ। आगे चलकर भारत की स्वतंत्रता के बाद जनजातियों में शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से प्रसार हुआ और जनजातीय समाज के लोग बड़ी संख्या में साक्षर हुए। उसी कड़ी में आगे चलकर झारखण्ड पृथक राज्य के रूप में अस्तित्व में आया इसके बाद तो जनजातीय समाज को शिक्षा से सीधा जोड़ने का प्रयास और तीव्र हो गया।

संदर्भ ग्रंथ – सूची

- पाण्डेय राम शकल (1987) राष्ट्रीय शिक्षा बिनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- दास गुप्ता ज्योति प्रोवर (1987) गर्ल्स ऐजूकेशन इन इंडिया।
- नालिनी, श्रीनिवास (2004), जनजातीय शिक्षा।
- सिंह गया (1998) उद्यीमान भारत में शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन